प्रमाद ही म्रत्यु है

रिपु संगठित है जानता है कूट रण की युक्ति को ।

अति है समर्पित मानता बस शास्त्र वर्णित उक्ति को ।

निज ध्येय विद संकल्प युत संतत समुद्यम रत प्रबल ।

आश्वस्त निज भावी विजय प्रति मानता तुमको अबल ।। 1 ।।

घिरते चतुर्दिक रिपु तिमिर को देख भी आश्वस्त हैं ।

वित्तीय सुख साधन जुटाने में निरंतर व्यस्त हैं ।

आसन्न संकट भांपने में मूढ़ जो असफल रहा ।

हो विपुल साधन वान भी परिभव विषम उसने सहा ।। 2 ।।

बढते हुए अन्याय का प्रतिकार जो करते नहीं ।

दुष्कर्म होते देख जो नर कोप से भरते नहीं ।

जो क्षुद्र स्वार्थों में निरत नित भीरुता से ग्रस्त हैं ।

शठ की उपेक्षा नित्य करने में बडे अभ्यस्त हैं ।। 3 ।।

पढते नहीं इतिहास निज परिभव भुलाते हैं सदा ।

दुर्मेध वे जो जान कर आहूत करते आपदा ।

किसके लिए संचय न रक्षित यदि रमा को कर सके ।

किस अर्थ का जीवन न यदि सम्मान से मर भी सके ।। 4 ।।

अब भी समय है जाग जाओ त्याग सुख सपने हरित ।

मतिमान हो अरि के चरित को जान लो अबतो त्वरित ।

त्यागो प्रचारित क्लीवता को शौर्य के तुम सूर्य हो ।

आराति उर दारक निनादित तार स्वर रण तूर्य हो ।। 5 ।।

शिव कुमार मिश्र

6.10.2022

भोपाल